अध्याय – 6
राजस्थान की अर्थव्यवस्था

राजस्थान की अर्थव्यवस्था कृषि प्रधान है क्योंकि राज्य की कुल जनसंख्या का 75.07 प्रतिशत भाग ग्रामीण जनसंख्या है जो कृषि एवं अन्य कृषि सम्बन्धी कार्यों में संलग्न है। इसके अतिरिक्त योजनाबद्ध विकास के प्रारंभिक दशकों में राज्य के सकल घरेलू उत्पाद में कृषि एवं सम्बद्ध क्षेत्र का योगदान अधिक था। स्थिर कीमतों (1999–2000) पर 1987–88 में सकल राज्य घरेलू उत्पाद में कृषि क्षेत्र का भाग 37.78 प्रतिशत था। उल्लेखनीय है भारत में 1991–92 से आर्थिक उदारीकरण की शुरूआत की गई। राजस्थान में भी आर्थिक उदारीकरण को आत्मसात किया गया। राजस्थान में आर्थिक उदारीकरण प्रारंभ करने के बाद यहां की अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण बदलाव की प्रवृत्ति देखने को मिल रही है। अर्थव्यवस्था में सबसे महत्वपूर्ण बदलाव यह हुआ है कि राज्य के सकल घरेलू उत्पादन में कृषि क्षेत्र की तुलना में सेवा क्षेत्र का योगदान बढ़ रहा है। राजस्थान की अर्थव्यवस्था में यह बदलाव भारत की अर्थव्यवस्था में हो रहे बदलाव के अनुरूप है अर्थात् सकल राज्य घरेलू उत्पादन में कृषि एवं सम्बद्ध क्षेत्र का योगदान तेजी से घट रहा है। अर्थव्यवस्था में हो रहा यह बदलाव एक प्रकार से विकसित देशों की भाँति अर्थव्यवस्था को दिशा देना जैसा है। सभी विकसित देशों में सकल घरेलू उत्पाद में कृषि का योगदान कम है। वर्तमान परिप्रेक्ष्य में अर्थव्यवस्था में कृषि की भूमिका को घटाकर और सेवा क्षेत्र की भूमिका को बढ़ाकर विकास की दर को तेज करना संभव है। भारत की अर्थव्यवस्था इस मार्ग पर कदम बढ़ा चुकी है।

राजस्थान भी भारतीय अर्थव्यवस्था की भाँति इस दिशा में आगे बढ़ता दिख रहा है। विकसित देशों में सकल घरेलू उत्पाद में कृषि की भूमिका कम होने के साथ कृषि पर निर्भर जनसंख्या कम है जबकि भारत में स्थिति विपरीत है। भारत में सकल घरेलू उत्पाद में कृषि की भूमिका तो घट रही है, किन्तु कृषि पर निर्भर जनसंख्या कम नहीं हो रही है। राजस्थान के संदर्भ में भी कमोबेश यही बात लागू होती है। सन्तोष की बात यह है कि भारत में आर्थिक उदारीकरण के दौर में कृषि क्षेत्र और ग्रामीणों को महत्व दिया जा रहा है। बजट का बड़ा भाग ग्रामीण विकास पर आवंटित किया जा रहा है। आर्थिक उदारीकरण की समृद्धि का लाभ गांवों में पहुँचाया जा रहा है। गाँवों के सामाजिक और आर्थिक विकास के लिए ग्रामीण विकास और गरीबी उन्मूलन की योजनाएं क्रियान्वित की जा रही है। मननरेगा इस दिशा में उल्लेखनीय है। इससे गांवों का कायाकल्प होना शुरू हो गया है।

राजस्थान की अर्थव्यवस्था की विशेषताएं

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में यहां की अर्थव्यवस्था की प्रमुख विशेषताएं निम्नांकित हैः

1. **सकल घरेलू उत्पाद में विकास क्षेत्रों की भूमिका में बदलाव** – अर्थव्यवस्था के सभी विकास शीर्षों को विशेष रूप से कृषि क्षेत्र, उद्योग क्षेत्र और सेवा क्षेत्र में बाँटा जाता है। कृषि क्षेत्र में कृषि, पशु पालन, वानिकी (forestry), मत्स्य पालन, खनन को सम्मिलित किया जाता है। उद्योग क्षेत्र में निर्माण, विनिर्माण, विद्युत, रेल्वे तथा सेवा क्षेत्र में व्यापार, होटल, जलपानगृह, बैंकिंग, बीमा, आवास, वैधानिक, व्यापारिक सेवाएं, लोक प्रशासन आदि को सम्मिलित किया जाता है।

   राजस्थान की अर्थव्यवस्था कृषि क्षेत्र से उद्योग और सेवा क्षेत्र की ओर बढ़ रही है। सकल राज्य घरेलू उत्पाद में स्थिर कीमतों पर कृषि क्षेत्र का योगदान 1991–92 में 39.21 प्रतिशत था जो 2005–06 में घटकर 27.52 प्रतिशत तथा 2011–12 में और

घटकर 22.09 प्रतिशत (अग्रिम अनुमान) रह गया। राजस्थान में 1991–92 के बाद सेवा क्षेत्र की भूमिका तेजी से बढ़ी है। सकल राज्य घरेलू उत्पाद में सेवा क्षेत्र का योगदान 1991–92 में 39.53 प्रतिशत था जो बढ़कर 2005–06 में 42.76 प्रतिशत तथा 2011–12 में और बढ़कर 48.06 प्रतिशत (अग्रिम अनुमान) हो गया। सकल राज्य घरेलू उत्पाद में उद्योग क्षेत्र का योगदान 1991–92 में 21.27 प्रतिशत से बढ़कर 2005–06 में 29.72 प्रतिशत तथा 2011–12 में 29.85 प्रतिशत (अग्रिम अनुमान) हो गया। यहां उल्लेख करना समीचीन होगा कि राजस्थान की कृषि मानसून पर निर्भर है। इसलिए सकल राज्य घरेलू उत्पाद में कृषि के योगदान में उच्चावचन की प्रवृत्ति रहती है।

2. **आर्थिक विकास दर** – राजस्थान की अर्थव्यवस्था ने विकास की गति पकड़ी है। सकल राज्य घरेलू उत्पाद में वृद्धि से आर्थिक विकास दर में बढ़ोतरी हुई है। आर्थिक वृद्धि दर स्थिर कीमतों पर 2005–06 में 6.70 प्रतिशत, 2006–07 में 7.81 प्रतिशत, 2007–08 में 7.11 प्रतिशत तथा 2008–09 में 5.48 प्रतिशत थी। वर्ष 2008–09 में धीमी आर्थिक वृद्धि दर का कारण ''वैश्विक मंदी 2008'' रहा। इस वर्ष भारत की ही नहीं विकसित देशों समेत पूरी विश्व की अर्थव्यवस्था की विकास दर घटी। राज्य की आर्थिक वृद्धि दर स्थिर 2004–05 कीमतों पर 2011–12 के दौरान 5.41 प्रतिशत कम हो गयी। राजस्थान ने आर्थिक विकास की ऊँची दर विषम भौगोलिक स्थिति और अकाल व सूखे के बावजूद अर्जित की है। इसलिए राजस्थान का आर्थिक विकास अन्य राज्यों की तुलना में अधिक मायने रखता है।

3. **प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि** – जैसे–जैसे राजस्थान विकास पथ पर आगे बढ़ रहा है वैसे–वैसे प्रति व्यक्ति आय में भी वृद्धि हो रही है। राजस्थान की प्रति व्यक्ति आय प्रचलित मूल्यों पर 1960–61 में 412 रूपये थी जो बढ़कर 2000–01 में 13020 रूपये, 2005–06 में और बढ़कर 17997 रूपये हो गई। प्रति व्यक्ति आय प्रचलित मूल्यों पर 2008–09 में 25654 रूपये हो गई। वर्ष 2011–12 में प्रति व्यक्ति आय चालू मूल्यों पर 47506 रूपये अनुमानित रही। स्थिर कीमतों (1999–2000) पर प्रति व्यक्ति आय 1960–61 में 6373 रूपये थी जो बढ़कर 2000–01 में 12840 रूपये तथा 2005–06 में बढ़कर 15541 रूपये हो गई। स्थिर कीमतों (2004–2005) पर प्रति व्यक्ति आय 2011–12 में 27421 रूपये हो गई।

4. **बड़ा राज्य बढ़ी भूमिका –** राजस्थान क्षेत्रफल की दृष्टि से भारत का सबसे बड़ा राज्य है। राजस्थान का क्षेत्रफल 342239 वर्ग किलोमीटर है जो भारत के कुल क्षेत्रफल 3287263 वर्ग किलोमीटर का 10.41 प्रतिशत है। राजस्थान केवल क्षेत्रफल में ही बड़ा नहीं है अब इसकी भूमिका विकास के विभिन्न शीर्षों में काफी बढ़ गई है। कहने को तो राजस्थान मरूस्थलीय प्रदेश है, किन्तु यहाँ के रेत के धोरे अथाह सम्पदा और समृद्धि अपने में समेटे हुए हैं। राजस्थान खनिजों की बहुलता के कारण 'खनिजों के अजायबघर' के नाम से जाना जाता है। यहाँ निर्मित ''इन्दिरा गाँधी नहर परियोजना'' के कारण वैश्विक पहचान है। इस मरू गंगा ने थारवासियों का कायाकल्प किया है। अब बाड़मेर के खनिज तेल भण्डारों ने राजस्थान को राष्ट्रीय स्तर पर सुर्खियों में ला खड़ा किया है। अधात्विक खनिजों के मूल्यों में राजस्थान अग्रणी राज्य है। वर्ष 2005–06 में भारत के अधात्विक खनिज मूल्यों में राजस्थान का भाग 23.41 प्रतिशत था जो भारत में सबसे अधिक था। इस वर्ष धात्विक खनिज मूल्य में भी भारत में राजस्थान का भाग 5.77 प्रतिशत था जो छत्तीसगढ़, कर्नाटक, उड़ीसा, गोवा के बाद सबसे अधिक था।

5. **योजनाबद्ध विकास का मार्ग** – आर्थिक विकास की गति को बढ़ाने के लिए योजनाबद्ध विकास का मार्ग अपनाया गया। इसे एक अप्रेल 1951 से प्रारंभ

किया गया। राज्य में योजनाबद्ध विकास के 62 वर्ष पूर्ण हो चुके हैं। इस समयावधि में राज्य में ग्यारह पंचवर्षीय योजना, छह वार्षिक योजनाएं सम्पन्न हो चुकी है। वर्तमान में बारहवीं पंचवर्षीय योजना क्रियान्वयन में है। इसकी समयावधि एक अप्रेल 2012 से 31 मार्च 2017 तक है। योजनाबद्ध विकास में सामाजिक और आर्थक विकास हुआ। राजस्थान पिछड़े राज्य की श्रेणी से ऊपर उठकर विकासशील राज्य की श्रेणी में सम्मिलित हो गया है।

6. **उदारीकृत अर्थव्यवस्था –** भारत में योजनाबद्ध विकास के दौरान 1991–92 से आर्थिक उदारीकरण प्रारंभ किया गया। इसमें सार्वजनिक क्षेत्र की तुलना में निजी क्षेत्र की भूमिका बढ़ गई है। राजस्थान ने भी बदलते आर्थिक परिवेश के साथ अर्थव्यवस्था को समायोजित करने के लिए अर्थव्यवस्था में आर्थिक उदारीकरण की शुरूआत की। ऊर्जा क्षेत्र में आर्थिक उदारीकरण लागू कर राजस्थान महत्वपूर्ण राज्य के रूप में उभरा। आर्थिक उदारीकरण के बाद राज्य में विदेशी निवेशकों की भूमिका बढ़ने लगी है। राजस्थान सरकार ने विनिवेश (disinvestment) की दिशा में भी कदम बढ़ा दिये है। राज्य बजट 2010–11 में ''राजस्थान राज्य खान एवं खनिज निगम'' में दस प्रतिशत पूंजी के विनिवेश की घोषणा आर्थिक उदारीकरण की ओर बढ़ता कदम है।

7. **क्षेत्रीय असंतुलन**– राजस्थान में योजनाबद्ध विकास और आर्थिक उदारीकरण से विकास का वातावरण बना है। राज्य में आर्थिक विकास की गति बढ़ने के साथ–साथ क्षेत्रीय असंतुलन भी नजर आने लगा है। आर्थिक उदारीकरण में अधिकांश पूंजी निवेशक जयपुर, कोटा, अलवर, अजमेर, जोधपुर आदि जिलों में अधिक आकर्षित हुआ है। सवाई माधोपुर, टोंक, करौली, बारां तथा मरूस्थलीय जिले विकास की दौड़ में अपेक्षाकृत पीछे हैं।

8. **अकाल और सूखा**– राजस्थान का पश्चिमी भाग मरूस्थलीय है। कृषि उत्पादन मानसून पर निर्भर है। मानसून के अनुकूल नहीं होने की दशा में अकाल और सूखा की स्थिति उत्पन्न हो जाती है। राजस्थान पशु सम्पदा में समृद्ध है, किन्तु अकाल और सूखे की मार मानव से ज्यादा पशुओं और वन्य जीवों पर पड़ती है। वर्ष 1981–82 से लेकर 2008–09 तक दो–तीन वर्षों (1983–84, 1990–91, 1994–95) को छोड़कर शेष सभी वर्षों में अकाल और अभाव से भारी क्षति हुई है। राज्य में अकाल के स्थायी समाधान की आवश्यकता है। इस दिशा में यहाँ पड़ने वाले सतत् अकाल, विषम भौगोलिक स्थिति को दृष्टिगत रखकर राजस्थान को विशेष दर्जा देने की दरकार है।

9. **ऋणग्रस्तता**– राजस्थान पर ऋण का बोझ है। राज्य जनसंख्या और आकार की दृष्टि से बहुत बड़ा राज्य है। फिर यहां की विषम भौगोलिक स्थिति है। अर्थव्यवस्था विकासशील अवस्था में है। ऐसी स्थिति में विकास को गति देने के लिए भारी वित्तीय संसाधनों की आवश्यकता होती है। राज्य सरकार के वित्तीय संसाधन सीमित है। इस कारण विकासगत जरूरतों को पूरा करने के लिए ऋण पर निर्भरता बढ़ गई है। बढ़ती ऋण ग्रस्तता का कारण राजस्व घाटा भी है। राजस्व घाटा 2005–06 में 660 करोड़ रूपये था जो 2010–11 के बजट अनुमानों में 1098 करोड़ रूपये जा पहुँचा। राजकोषीय घाटा उधार लेने की आवश्यकता को दर्शाता है। राजकोषीय घाटा 2005–06 में 5150 करोड़ रूपये था जो 2011–12 के बजट अनुमानों में 8063 करोड़ रूपये जा पहुँचा। राज्य पर कुल कर्जा 2009–10 के संशोधित अनुमानों में 90208 करोड़ रूपये था।

सार रूप में देखें तो राजस्थान की अर्थव्यवस्था आर्थिक पिछड़ेपन से पूर्ण रूप से उबर चुकी है। विभिन्न आर्थिक सूचकों में हुई प्रगति के आधार पर

राजस्थान को विकासशील अर्थव्यवस्था कहा जाए तो अतिशयोक्ति नहीं होगी। आज राजस्थान में आधारभूत संरचना आर्थिक विकास को गति देने में अनुकूल है। सामाजिक विकास में भी राजस्थान प्रगति की ओर अग्रसर है। यहाँ कृषि और उद्योग क्षेत्र में विकास की असीम संभावनाएं हैं। सार्वजनिक क्षेत्र व्यय में अधिक वृद्धि हो और निजी निवेशकों को आकर्षित किया जाये तो राजस्थान विकसित राज्यों की श्रेणी में सम्मिलित हो सकता है।

राजस्थान की जनसंख्या

जनसंख्या आर्थिक विकास का एक निर्धारक तत्व है। जनसंख्या का अनुकूलतम् स्तर आर्थिक विकास में सहायक होता है। किसी राष्ट्र की स्वस्थ, बुद्धिमान, प्रगतिशील एवं सक्रिय जनसंख्या ही उसकी अमूल्य निधि एवं प्रेरक शक्ति है। वैश्विक परिप्रेक्ष्य में देखें तो विकसित देशों में बढ़ती जनसंख्या ने विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इसके विपरीत विकासशील देशों में बढ़ती जनसंख्या विकास में अवरोध सिद्ध हुई। भारत में अधिक जनसंख्या योजनाबद्ध विकास के प्रारंभिक दशकों में आर्थिक पिछड़ेपन का बड़ा कारण बनी। वर्तमान में आर्थिक विकास की गति के बढ़ने के साथ जनसंख्या विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। यह तथ्य राजस्थान के संदर्भ में भी सत्य है। जनसंख्या के विकास में सहयोगी होने के लिए जनसंख्या में संख्यात्मक वृद्धि के स्थान पर गुणात्मक वृद्धि आवश्यक होती है।

राजस्थान क्षेत्रफल की दृष्टि से ही नहीं जनसंख्या के आकार की दृष्टि से भी बड़ा राज्य है। हालांकि जनसंख्या संबंधी सूचकों में राजस्थान की स्थिति अपेक्षाकृत कमजोर है, किन्तु हाल ही के वर्षों में राजस्थान में आर्थिक विकास का वातावरण बना है। इससे सामाजिक विकास के क्षेत्र में भी सुधार की प्रवृत्ति दृष्टिगोचर हो रही है।

राजस्थान की जनसंख्यकीय विशेषतायें निम्नांकित है–

1. **जनसंख्या का आकार** – वर्ष 2011 की ताजी जनगणना के अनुसार राजस्थान की जनसंख्या 6.86 करोड़ (प्रोविजनल) है। राजस्थान की जनसंख्या भारत की कुल जनसंख्या 121.02 करोड़ का 5.67 प्रतिशत है। जनसंख्या के आकार की दृष्टि से राजस्थान का भारत में महत्वपूर्ण स्थान है। राजस्थान में जयपुर जिले की जनसंख्या 66.64 लाख सबसे अधिक तथा जैसलमेर जिले की 6.72 लाख सबसे कम है। राजस्थान की जनसंख्या वृद्धि (1951 से 2011 तक) निम्न तालिका से स्पष्ट है :

राजस्थान की जनसंख्या

वर्ष	जनसंख्या(करोड़ में)	दशकीय वृद्धि (प्रतिशत में)
1951	1.60	15.20
1961	2.02	26.20
1971	2.58	27.83
1981	3.43	32.97
1991	4.40	28.44
2001	5.65	28.41
2011(प्रोविजनल)	6.86	21.44

2. **जनसंख्या की दशकीय वृद्धि दर** – राजस्थान में जनसंख्या तेज गति से बढ़ रही है। राज्य की जनसंख्या की दशकीय वृद्धि दर 1981 में 32.97 प्रतिशत थी। हालांकि बाद की जनगणनाओं में जनसंख्या वृद्धि दर कम हुई है। जनसंख्या की दशकीय वृद्धि दर 2001 में कुछ कम होकर 28.41 प्रतिशत रही इसके बावजूद भी यह भारत की 2001 की दशकीय वृद्धि दर 21.34 प्रतिशत से बहुत अधिक थी। राजस्थान की जनसंख्या दशकीय वृद्धि दर 2011 में कम होकर 21.44 प्रतिशत रह गई है। राजस्थान में 2001–11 के दशक में जनसंख्या वृद्धि दर में बाड़मेर जिले 32.55 प्रतिशत सबसे ज्यादा तथा गंगानगर जिले 10.06 प्रतिशत सबसे कम है।

3. **जनसंख्या घनत्व –** जनसंख्या घनत्व से अभिप्राय प्रति वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में निवास करने वाले व्यक्तियों की संख्या से है। राजस्थान के जनसंख्या घनत्व में उत्तरोत्तर वृद्धि हुई है। जनसंख्या घनत्व में वृद्धि का प्रमुख कारण तीव्र ग्रति से बढ़ रही जनसंख्या

है। भारत के जनसंख्या घनत्व की तुलना में राजस्थान का जनसंख्या घनत्व सदैव कम रहा है। राजस्थान का जनसंख्या घनत्व 1951 में 47 व्यक्ति वर्ग किलोमीटर था जो बढ़कर 1991 में 129 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर तथा 2001 में और बढ़कर 165 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर हो गया। राजस्थान का जनसंख्या घनत्व उत्तरोत्तर वृद्धि के बावजूद भारत के जनसंख्या घनत्व से कम है। भारत का जनसंख्या घनत्व 2001 में 324 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर था। राजस्थान का जनसंख्या घनत्व 2011 में तेजी से बढ़कर 201 प्रति व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर हो गया। राजस्थान के जिलों में जनसंख्या घनत्व के संबंध में भारी असमानता है। 2011 में जयपुर जिले का जनसंख्या घनत्व 598 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर राज्य में सबसे अधिक था जबकि जैसलमेर जिले का 17 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर जनसंख्या घनत्व सबसे कम था।

4. **लिंगानुपात** – लिंगानुपात से आशय प्रति हजार पुरूषों के पीछे महिलाओं की संख्या से है। राजस्थान में प्रति हजार पुरूषों के पीछे महिलाओं की संख्या कम है। राजस्थान में 1991 में प्रति हजार पुरूषों के पीछे महिलाओं की संख्या 910 थी जो 2001 में बढ़कर 921 हो गई। राज्य का लिंगानुपात 2011 में थोड़ा बढ़कर 926 हुआ है। राजस्थान में डूँगरपुर एवं राजसमन्द जिले ऐसे थे जहाँ प्रति हजार पुरूषों से महिलाओं की संख्या अधिक है किन्तु 2011 में डूँगरपुर में 990 तथा राजसमन्द में 988 महिलाएँ प्रति हजार पुरूष रह गई है। राज्य में 2011 में सबसे कम लिंगानुपात धौलपुर जिले में है। यहां प्रति हजार पुरूषों के पीछे 845 महिलाएं है। राज्य में सबसे अधिक लिंगानुपात डूंगरपुर जिले में 990 है।

5. **साक्षरता दर** – राजस्थान में पिछले दशकों में साक्षरता में वृद्धि हुई है, किन्तु अभी भी राजस्थान साक्षरता की दृष्टि से राष्ट्रीय औसत से पीछे है। राजस्थान में ग्रामीण क्षेत्रों विशेषकर महिलाओं में साक्षरता का अभाव है।

साक्षरता की स्थिति

(प्रतिशत में)

	भारत			राजस्थान		
	1991	**2001**	**2011**	**1991**	**2001**	**2011**
व्यक्ति	52.21	64.84	74.04	38.55	60.41	67.06
पुरूष	64.13	75.26	82.04	54.99	75.70	80.51
महिला	39.29	53.67	65.46	20.44	43.85	52.66

स्त्रोत : भारत 2006, वार्षिक संदर्भ ग्रन्थ पृ .13

इण्डिया सेन्सस 2011 (प्रोविजनल)

वर्ष 1991 में राजस्थान में एक प्रकार से निरक्षरता का अंधकार था। वर्ष 1991 में राज्य की साक्षरता दर केवल 38.55 प्रतिशत थी जो भारत की साक्षरता दर 52.21 प्रतिशत से बहुत कम थी। वर्ष 1991 में बिहार के बाद सबसे ज्यादा निरक्षर राजस्थान में थे। इसके बाद राजस्थान में साक्षरता वृद्धि की विशेष पहल की गई। राजस्थान में साक्षरता 2001 में बढ़कर 60.41 प्रतिशत हो गई। पुरूष साक्षरता में राजस्थान ने अखिल भारत पुरूष साक्षरता को पीछे छोड़ दिया। वर्ष 2001 में भारत में पुरूष साक्षरता 75.26 प्रतिशत की तुलना में राजस्थान में पुरूष साक्षरता 75.70 प्रतिशत उल्लेखनीय है। हालांकि महिला साक्षरता में स्थिति अभी भी राष्ट्रीय औसत से काफी कमजोर बनी हुई है। वर्ष 2001 में भारत में महिला साक्षरता 53.67 प्रतिशत की तुलना में राजस्थान में महिला का साक्षरता 43.85 प्रतिशत थी। राजस्थान में 2011 में साक्षरता दर बढ़कर 67.06 प्रतिशत, पुरूष साक्षरता 80.51 तथा महिला साक्षरता 52.66 प्रतिशत हो गई। 2011 में राजस्थान का सबसे अधिक साक्षर कोटा रहा जहाँ साक्षरता का प्रतिशत 77.48 अंकित किया गया। इसके पश्चात् जयपुर (76.44) प्रतिशत, झुन्झुनू 74.72 प्रतिशत तथा सीकर 72.98 प्रतिशत रहा। जालौर जिला सबसे कम साक्षरता वाला जिला है जहाँ साक्षरता 55.58 प्रतिशत है।

6. **मानव विकास** – वर्तमान में आर्थिक विकास के साथ मानव विकास पर अधिक ध्यान दिया जाने लगा है।

राजस्थान मानव विकास के क्षेत्र में राष्ट्रीय औसत से पीछे है। मानव विकास में शिक्षा के अलावा औसत आयु, शिशु मृत्यु दर, जन्म दर, मृत्यु दर आदि को सम्मिलित किया जाता है। भारत और राजस्थान के मानव विकास का स्वरूप निम्न तालिका से स्पष्ट है–

मानव विकास के कुछ सूचक

क्र.सं.	सूचक	वर्ष	भारत	राजस्थान
1	जन्म पर जीवन प्रत्याशा	2002–2006	63.5	62.0
2	शिशु मृत्यु दर (प्र.ह. जन्म पर)	2007	55.0	65.0
3	जन्म दर (प्रति हजार)	2007	23.1	27.9
4	मृत्यु दर(प्रति हजार)	2007	7.4	6.8

Source: Enonomic Survey 2008-09, Page A-119, Government of India.

भारत की जन्म पर जीवन प्रत्याशा (life expectancy at birth) 2002–2006 में 63.5 वर्ष की तुलना में राजस्थान में जीवन प्रत्याशा 62 वर्ष है। राजस्थान में अधिक शिशु मृत्यु दर (infant mortality rate) चिन्ताजनक है। भारत में शिशु मृत्यु दर 2007 में 55 प्रति हजार की तुलना में राजस्थान में 65 प्रति हजार बहुत अधिक है। राजस्थान में जन्म दर अखिल भारत औसत से ज्यादा है। राजस्थान ने मृत्यु दर को कम करने में सफलता प्राप्त की है। राजस्थान में प्रति हजार मृत्यु दर 2007 में 6.8 थी जो भारत में मृत्यु दर 7.4 प्रति हजार से कम थी।

अभ्यासार्थ प्रश्न

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. अर्थव्यवस्था के कृषि क्षेत्र में सम्मिलित नहीं है –
   (अ) मत्स्य (ब) पशुपालन
   (स) आवास (द) वानिकी
2. वित्त वर्ष 2008–09 में विकास दर घटने का प्रमुख कारण है–
   (अ) महंगाई (ब) वैश्विक मंदी 2008
   (स) अकाल (द) कृषि उत्पादन में कमी
3. राजस्थान की प्रचलित मूल्यों पर 2011–12 में प्रति व्यक्ति आय है–
   (अ) 25654 रूपए (ब) 18010 रूपए
   (स) 17997 रूपए (द) 47506 रूपए
4. भारत के कुल क्षेत्रफल में राजस्थान के क्षेत्रफल का भाग है–
   (अ) 9.60 प्रतिशत (ब) 8.90 प्रतिशत
   (स) 13.50 प्रतिशत (द) 10.41 प्रतिशत
5. ग्यारहवीं पंचवर्षीय योजना की समयावधि है–
   (अ) 2002–07 (ब) 1992–97
   (स) 2007–12 (द) 1997–02
6. वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार राजस्थान की जनसंख्या है–
   (अ) 4.40 करोड़ (ब) 6.86 करोड़
   (स) 3.43 करोड़ (द) 2.58 करोड़
7. वर्ष 2011 में राजस्थान का जनसंख्या घनत्व है–
   (अ) 324 (ब) 274
   (स) 129 (द) 201

अति लघूत्तरात्मक प्रश्न

1. आर्थिक उदारीकरण की शुरूआत कब हुई?
2. अर्थव्यवस्था के विकास शीर्षों के नाम लिखिए।
3. सेवा क्षेत्र में किसे सम्मिलित किया जाता है?
4. राजस्थान की विकास दर स्थिर कीमतों पर 2011–12 में कितनी थी?
5. राजस्थान का क्षेत्रफल कितना है?
6. राजस्थान में 2011 में महिला साक्षरता कितनी है?

लघूत्तरात्मक प्रश्न

1. राजस्थान की अर्थव्यवस्था में बदलाव की प्रवृत्ति बताइये।
2. सकल राज्य घरेलू उत्पाद में विकास क्षेत्रों की क्या भूमिका है?
3. राजस्थान के संदर्भ में 'बड़ा राज्य बड़ी भूमिका' को स्पष्ट कीजिए।
4. राजस्थान में बढ़ती ऋणग्रस्तता के क्या कारण है?
5. भारतीय परिप्रेक्ष्य में राजस्थान की साक्षरता की स्थिति कैसी है?

निबन्धात्मक प्रश्न

1. राजस्थान की अर्थव्यवस्था की विशेषताओं का वर्णन कीजिए।
2. राजस्थान में जनसंख्या की विशेषताएं बताइये।
3. राजस्थान में मानव विकास की व्याख्या कीजिए।

□□□